2 नित्य बोधिनी माँ जिनवाणी

नित्य बोधिनी माँ जिनवाणी, चरणो में सादर वंदन।
भटक भटक कर हार गये हम, मेटो भव–भव का क्रंदन।।टेक।।

मै अनादि से मोह नींद की, मदहोशी में मस्त रहा।
परद्रव्योकी आसक्ति में, हरपल में संलग्न रहा।।
खोज रहा परमें सुखको मैं, व्यर्थ गया सारा मंथन।।१।।

अनेकांतमय जिनवाणीने, मुक्ति का पथ दिखलाया।
सप्त तत्व और छह द्रव्यो का, ज्ञान जगत को करवाया।।
हम भी प्रभु वाणी पर चलकर, मेटेंगे भवके बंधन।।२।।

शुद्धातम स्वरुप से सज्जित, द्वादशांगमय जिनवाणी।
पावन वाणी को अपनाकर, लाखो संत बने ज्ञानी।।
जयवंतो हे माँ जिनवाणी, बार–बार हम करे नमन।।३।।

हे! नित्य जागृत करने वाली माता जिनवाणी आपके चरणों में सादर वन्दन करता हूँ। हे माता! इस संसार में भ्रमण करते–करते हम हार गये हैं। अब आपसे प्रार्थना है कि हमारे इन भवों–भवों के दु:खों का अन्त कर दो।

मैं अनादि काल से ही मोह नींद की बेहोशी में मस्त सोता रहा और इसके कारण परद्रव्यों–परसंयोगों में आसक्त बुद्धि रखकर सारा समय उनके संग्रह में ही लगा रहा। मैं व्यर्थ में ही परद्रव्यों में सुख की खोज करता रहा और इससे मेरा सारा चिंतन–मनन व्यर्थ ही हो गया।

अनेकांत बोधक जिनवाणी माता ने इस जगत को मोक्ष का मार्ग दिखाकर, सात तत्व और छह द्रव्यों का सम्यक ज्ञान करवाया है। अब हम भी जिनेन्द्र भगवान द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर इस संसार के बंधनों का नाश करेंगे।

द्वादशांगमय जिनवाणी माता सदैव शुद्धात्म स्वरूप को दिखाने वाली है तथा इसी वाणी को अपनाकर अनेक जीव ज्ञानी और मुनि बने हैं, अत: हे जिनवाणी माँ! हम आपको बारम्बार नमन करते हैं और भावना भाते हैं कि आप सदैव जयवन्त रहो ।